<u>प्रपत्ति (शरणागति, न्यासं, आत्मसमर्पण, आत्म-निक्षेपं, भरन्यासम)</u>

अनन्यसार्थे स्वाधिष्ठे महाविश्वासपूर्वकं, तदेको उपायताकांक्ष प्रपत्ति शरणागति।

जब व्यक्ति यह समझता है कि वो खुद अपनी रक्षा करने में असमर्थ (कर्म, ज्ञान एवं भक्ति से हीन) है और भगवान के अलावा कोई और उसकी रक्षा करने में समर्थ नहीं हैं तो वह भगवान को असहाय भाव में रक्षा करने को पुकारता है। मन कि इस अवस्था को को शरणागति (*शरणं आगति*) कहते हैं। अपनी हार स्वीकार कर भगवान को उपाय बनने की विनती करना ही उपाय है। '*उप आयते इति उपायः*'। जो लक्ष्य के करीब ले जाए उसे उपाय कहते हैं। शरणागति में तत्त्व नारायण हैं, पुरुषार्थ भी नारायण हैं और हित (उपाय) भी नारायण ही हैं।

अहमस्य अपराधानाम आलयः अकिंचनोगतिः ।

त्वमेव उपाय भूतो में भवति प्रार्थनाम इति शरणागति।। (अहिर्बुद्ध संहिता)

उपाय को दो भागों में वर्गीकरण किया गया है:

१) **साध्योपाय:** वह उपाय जो हमारे द्वारा स्थापित किया जाये और हमारे द्वारा क्रियाशील हो। इसे स्वगत स्वीकारा भी कहते हैं क्योंकि इस उपाय में हम अपने प्रयत्नों द्वारा भगवान तक पहुँचने का प्रयत्न करते है। उदाहरण स्वरुप बांदरी का बच्चा जो स्वयं उछलकर अपने माँ को पकड़ता है। इसलिए इस उपाय को मर्कट-किशोर-न्याय भी कहते हैं। कर्म योग, ज्ञान योग और भक्ति योग साध्योपाय है।

२) **सिद्धोपाय:** वह उपाय जो पहले से स्थापित है और हमें सिर्फ उसका चुनाव करना है। इसे परगत स्वीकारा भी कहते हैं क्योंकि इस उपाय में हमारे भगवान तक पहुँचने का उत्तरदायित्व भगवान पर ही होता है और भगवान 'सत्य-संकल्प' हैं, कभी भी अपनी जिम्मेदारी से नहीं चूकते। उदाहरण स्वरुप बिल्ली का बच्चा जिसे पकड़कर ले जाने की जिम्मेदारी स्वयं बिल्ली की है। इसलिए इस उपाय को मर्धर-किशोर न्याय भी कहते हैं।

शरणागति सिद्धोपाय है। शरणागति भी भक्ति ही है पर भक्ति योग में भक्ति उपाय है और शरणागति में स्वयं भगवान ही उपाय हैं। एक शरणागत कर्म, ज्ञान, भक्ति सबका अनुशीलन करता है पर उपाय के तौर पर नहीं बल्कि सिर्फ भगवान के मुखोल्लाष के लिये। इस मार्ग में सफलता कि १०० फीसदी गारंटी है क्योंकि बांदरी का बच्चा शायद चूक भी जाए अपनी माँ को पकड़ने में, पर बिल्ली अपने बच्चे को सुरक्षित उस पार करने में कभी नहीं चुकती। यह उपाय खास तौर पर अयोग्य, लाचार और सभी साधनों से हीन साधकों के लिये है।

पञ्चरात्र आगम में आता है:

भक्त्या परमया भावी, प्रपत्या वा महामदे। (भक्ति और प्रपत्ति ही केवल दो मार्ग हैं भगवान तक पहुँचने के लिये।)

दोनों ही मार्ग के अपने फायदे और कमियाँ हैं। भक्ति योग के कर्म और ज्ञान योग दो अंग हैं। ज्ञानयुक्त कर्म ही भक्ति की ओर ले जाता है। भक्ति योग में मन, बुद्धि और शरीर निर्बाध भगवान की ओर होने चाहिए (अनन्य चिंतयतो माम; सततं कीर्तयन्तो माम)।

प्रपत्ति मार्ग की सबसे बड़ी परेशानी यह है की मानसिक रूप से एक शरणागत के ढाँचे में ढलना मुश्किल है और दूसरा यह की हमें शरण्य (भगवान) के प्रति यह अटूट श्रद्धा होनी चाहिए की वो अवश्य हमारी रक्षा करेंगे। लेकिन एक बार शरणागत होने के बाद आगे का मार्ग अत्यंत सुगम हो जाता है। उदाहरणस्वरुप छत पे जाने के दो उपाय हैं। एक तो सीढियों के द्वारा और दूसरा लिफ्ट से। सीढ़ी से चढ़ना साध्योपाय है क्योंकि व्यक्ति को अपने सामर्थ्य पर भरोसा है। लिफ्ट के द्वारा जाना सिद्धोपाय है क्योंकि लिफ्ट का उपयोग करने का अर्थ ही है की हमने अपनी हार स्वीकार कर ली है कि हम अपने स्वयं के प्रयास से छत पे चढ़ने में असमर्थ हैं और दूसरा की हम जल्दी से जल्दी छत पे जाना चाहते हैं। इस उदाहरण में लिफ्ट भगवान हैं और लिफ्टमैन गुरु। हमें लिफ्ट और लिफ्टमैन पर पूर्ण विश्वास होने की जरुरत है।

शरणागत होने के लिये पूर्वापेक्षा

यूँ तो सभी तरह से अयोग्य होना ही सबसे बड़ी योग्यता है प्रपत्ति में, फिर भी पूर्वापेक्षा बताते हैं:

अनन्यसार्थे स्वाधिष्ठे महाविश्वासपूर्वकं, तदेको उपायताकांक्ष प्रपत्ति शरणागति।

1) **स्वाधिष्ठे अनन्यसार्थे (निराश्रयता)** :-

   १) **आकिंचन्यम:** शरणागति '*अहंकार, ममत्व और स्वातंत्र्य*' का त्याग है। इस दुनिया में कोई भी व्यक्ति अपनी हार स्वीकार करने को तैयार नहीं है। हर व्यक्ति अपने-अपने अलग अलग प्रकार के अभिमान के साथ जी रहा है। अहंकार त्याग करने की मुश्किल के कारण ही शरणागति मुश्किल दृष्टिगोचर होती है। हमें यह स्मरण रखना चाहिए की सर्वोत्तम तत्त्व क्या है, सर्वोत्तम पुरुषार्थ क्या है और उसका उपाय क्या है। अगर मैं अपने प्रयासों से मोक्ष प्राप्त करने में सक्षम होता तो कई हजार वर्ष पहले ही कर चूका होता। आकिंचन्यम का अर्थ है अपने आप को कर्म, ज्ञान और भक्ति से हीन समझना और पछताते हुए भगवान से उपाय बनने की प्रार्थना करना। "हे श्रीमन नारायण! मैं सभी साधनों से हीन हूँ पर मैं आपके दिव्य धाम में आपके नित्य कैंकर्य की प्रार्थना करता हूँ कृपया अपने अहैतुकी कृपा से मुझे मोक्ष प्रदान करें।

   २) **अनन्य-गतित्वं :** इस बात का पूर्ण विश्वास की भगवान के अलावा कोई और हमारी मदद नहीं कर सकता। लोकाचार्य स्वामी बताते हैं की यदि पिता रक्षक होते तो हिरण्यकशिपू ने प्रह्लाद की रक्षा की होती। यदि माता रक्षक होती तो कैकेयी ने भरत की रक्षा की होती, यदि भाई रक्षक होता तो रावण ने विभीषण की रक्षा की होती। यदि पति रक्षक होते तो द्रौपदी के पाँच महाबली पतियों ने उनकी रक्षा की होती। यदि हम स्वयं अपने रक्षक होते तो गजराज ने ग्राह से स्वयं की रक्षा की होती। इन सभी की रक्षा

श्रीमन नारायण ने ही की इसलिए श्रीमन नारायण ही एकमात्र रक्षक हैं। अन्य देवताओं के पास इस भाव से जाना की वो हमारी रक्षा करेंगे, यह शरणागति के प्रतिकूल है। शिव, इंद्र आदि देवता स्वयं संसार-मंडल में फंसे हैं अपनी रक्षा के लिये श्रीमन नारायण पर आश्रित हैं।

2) **महाविश्वास :** श्रीमन नारायण पर यह पूर्ण विश्वास की वो अवश्य ही हमारी रक्षा करेंगे। अगर महाविश्वास न हो तो फिर शरणागति का अर्थ ही क्या है।

उपजई राम चरण विश्वासा, भवनिधि तरहीं नर बिनहिं प्रयासा

सवाल) भगवान हमारे 'उपाय' बनने को क्यों तैयार होंगे?

उत्तर): भगवान हमेशा ही हमारे उपाय बनने को उत्सुक रहते हैं पर हमें अपने बल, बुद्धि और सामर्थ्य पर यकीन होता है। हम भगवान से पृथक हो इस संसार का आनंद लेना चाहते हैं, इसलिए भगवान हमारे 'उपाय' नहीं बनते। जबतक हम अपनी हार स्वीकार कर भगवान से असहाय अवस्था में प्रार्थना नहीं करेंगे तबतक भगवान हमारे उपाय कैसे बन सकते हैं। गजेन्द्र और द्रौपदी के संकट में भी भगवान ने तबतक 'उपाय' बनना स्वीकार नहीं किया जबतक उन्होंने शरणागति नहीं की।

कोई कंजूष से महा-कंजूष व्यक्ति ही क्यों ना हो, यदि कोई भिखारी उसका चरण पकड़ ले तो वह कुछ न कुछ भीख अवश्य देगा तो फिर अपार-वात्सल्यमय भगवान हमारे उपाय बनने को तैयार क्यों नहीं होंगे। एक मालिक अपने कर्मचारियों को उनके योग्यता के अनुसार ही वेतन देता है पर यदि कोई उसके आगे दंडवत हो जाये और अपनी लाचारी जताए तो मालिक बिना किसी योग्यता के कुछ रुपये अवश्य देगा। इसी तरह हमारे कर्म, ज्ञान और भक्ति हीन होने के वावजूद भी हमें मोक्ष अवश्य प्रदान करेंगे अगर हम उनके चरणों का आश्रय लें। ऐसा स्वयं भगवान की प्रतिज्ञा है:

सर्व ...

जिस तरह एक बछड़ा के धूल में लिपटे होने के वावजूद गाय उसे चाट-चाटकर साफ करती है, उसी प्रकार भगवान भी अपने शरणागतों के दोष और पूर्व के संचित पाप नहीं देखते।

सवाल) क्या शरणागति उपाय है?

उत्तर) वास्तव में शरणागति उपाय नहीं योग्यता (व्याचम) है। उपाय तो केवल श्रीमन नारायण की अहैतुकी कृपा है।

सवाल) क्या कोई भी शरण्य बन सकता है?

उत्तर) एक आदर्श शरण्य के पास निम्न दो गुण होने चाहिए:

१) परत्वं : जिसके जोड़ का दूसरा कोई न हो।
२) सौलभ्यम: जो सर्व-सुलभ हो (भगवान अन्तर्यामी, अर्चा और आचार्य के रूप में सर्व-सुलभ हैं)

शरणागति के ६ अंग

आनुकूलश्च संकल्पः प्रातिकूलश्च वर्जनं;

रक्षिष्यती इति विश्वासः, गोप्त्रिप्त वर्णनश्तथा;

कार्पण्य आत्मनिक्षेपे षड्विधा शरणागति।।

१) भगवान के अनुकूल कर्म करना

२) भगवान के प्रतिकूल कर्म का परित्याग

३) यह विश्वास की भगवान अवश्य हमारी रक्षा करेंगे

४) भगवान से शरणागति की प्रार्थना करना

५) स्वयं को कर्म, ज्ञान और भक्ति से हीन समझना (कार्पण्यं)

६) आत्मा जो की भगवान की सम्पत्ति है, भगवान को वापस सौंप देना।

कहानी: परकाल सूरी आलवार एक बार जब शालिग्राम गए थे, जहाँ विश्व का सबसे गहरा दर्रा है, उन्होंने देखा की दो कीड़े आपस में बात कर रहें हैं। पहले कीड़े ने कहा मैं दर्रे के उस पार सामने वाली पहाड़ी पे जाऊँगा। दुसरे कीड़े ने मानने से इनकार कर दिया। एक कीड़े की आयु ही कितनी होती एक पहाड़ से उतरकर दूसरे पहाड़ पर चढ़ने में तो उसके कई जन्म बीत जायेंगे। दोनों में शर्त लगी। पास ही एक शेर छलाँग लगाने को था। उस कीड़े ने अपने को उसके पैरों के सामने कर लिया और वो शेर के पैर से चिपका हुआ उस पार चला गया। यही शरणागति है। सभी प्रकार से मोक्ष के अयोग्य होने के वावजूद भी अगर हम श्रीमन नारायण के चरणों का आश्रय लें तो श्रीमन नारायण अवश्य ही हमें परमपद देंगे।

टिप्पणी:- नारायण के प्रति कोई भी शरणागति बिना श्री (महालक्ष्मी माता) के पूर्ववर्ती शरणागति के सफल नहीं होती।